Introduction

प्राक्कथन

परिवार समाज की प्राथमिक इकाई है जो जन्म से ही व्यक्ति-जीवन के साथ संयुक्त है। 'परिवार' शब्द अंग्रेजी के 'फैमिली' शब्द का हिन्दी रूपान्तर है। 'फैमिली' लेटिन भाषा के 'फेमूलस' शब्द से बना है जिसका अर्थ है सेवक अथवा नौकर। अर्थात् किसी समय परिवार में माता-पिता, भाई-बहन, बच्चे और नौकरों को भी सम्मिलित किया जाता था, जो एक-दूसरे के प्रति कर्तव्य और सेवा-भावना से जुडे होते थे। किन्तु, परिवर्तन जीवन में अवश्यम्भावी है, इसीलिए समय और परिस्थितियो के अनुसार परिवार के स्वरूप में भी क्रमशः परिवर्तन आता गया। अब परिवार बिना बच्चों के भी हो सकता है और माता-पिता तथा बच्चों को मिलाकर भी। आज भी परिवार का स्वरूप कुछ भी हो, प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से उसकी सेवा और कर्तव्य भावना निष्प्राण और विलुप्त नहीं हो गई है।

परिवार की कुछ मूलभूत विशेषताएँ होती हैं, जो अन्य संस्थाओं से अलग होती हैं जिनके चलते आज भी 'परिवार' संस्था ने अपने अर्थ को किसी न किसी रूप में बनाये रखा है। इस अर्थ में विखण्डन और व्यवधान की स्थितियाँ बनती-बिगड़ती रही हैं, जिनका प्रतिबिम्बन आधुनिक कहानी में हुआ है। विविध भारतीय भाषाओं में और बहुत कुछ विदेशी साहित्य में भी परिवार की इस वेदना के दंश को बखूबी चित्रांकित किया गया है। साठोत्तरी कहानियों में समाज का प्रभाव अलग हो जाने के कारण परिवर्तन हुआ है। आज के बदलते युग में पारिवारिक संबंधों में बदलाव की अनेकशः स्थितियों के कारण पारिवारिक विघटन हुआ है : नये परिवेश में पुराने मूल्यों का असंगत प्रतीत होना, पीढ़ियों का अंतराल, युवा पीढी की परम्पराओं में अनास्था,

पुरातन पीढी का मूल्यों के प्रति मोह, जनसंख्या वृद्धि, बढ़ती कीमतें, आवास की समस्या, आर्थिक दबाव, राजनीतिक विसंगतियाँ, उच्च शिक्षा और पश्चिमी सस्कृति के प्रभाव से जन्मी नयी मानसिकता, औद्योगिक - यांत्रिक जीवन, महानगरीय अजनबीपन आदि आज के साठोत्तरी युग में पारिवारिक विघटन के मुख्य कारण हैं। आज मनुष्य जीवन में और विशेष रूप से समकालीन जटिल स्थितियो वाले जीवन में सम्बन्धों के विघटन का कोई एक कारण नहीं हो सकता। पारिवारिक विघटन की पृथक्-पृथक् स्थितियाँ और उनके कारणों को शोध-प्रबन्ध में अलग-अलग शीर्षकों के अन्तर्गत लिया गया है। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से भी यह आवश्यक था। प्रयत्न यही किया गया है कि हिन्दी-गुजराती कहानियों को साथ-साथ लेकर उनका अनुशीलन किया जाए। तुलनात्मक अध्ययन की एक वजह यह भी रही है कि दोनों भाषाएँ सहोदरा हैं। दोनों का उद्भव शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है और दोनों भगिनी भाषाएँ हैं। दोनों भाषाओं की कहानियों में पारिवारिक विघटन की स्थितियाँ लगभग समरूप रही हैं। गुजरात प्रांत की सीमा हिंन्दी प्रदेशों से मिली हुई है इसीलिए उनकी सामाजिक स्थितियाँ भी काफी मिलती-जुलती हैं। हिन्दी-गुजशती कहानियों के अनुशीलन से यह तथ्य प्रमाणित हो जाता है।

एम. ए. द्वितीय वर्ष में साहित्य रूप के अन्तर्गत मैंने 'हिन्दी कहानी' का विशेष अध्ययन किया, उस समय जीवन से जुड़े ज्वलंत प्रश्न 'पारिवारिक विघटन' की ओर मेरा ध्यान आकृष्ट हुआ, जिसकी चर्चा हमारी अध्यापिका श्रीमती शुक्ल बार-बार करती थीं। पीएच. डी. का विषय पंजीकृत कराते समय यही विषय चर्चा के उपरांत सुनिश्चित किया गया।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध को विषय की सुविधा की दृष्टि से आठ अध्यायों में विभाजित किया गया है। तृतीय, चतुर्थ और पंचम् अध्याय में व्यक्ति, परिवार और समाज का क्रम न रखकर परिवार को पहले रखा गया क्योंकि व्यक्ति परिवार में जन्म लेता है, परिवार की स्थितियों, पालन-पोषण और रहन-सहन के अनुसार व्यक्ति का एक विशिष्ट व्यक्तित्व विकसित होता है, उसकी अलग विचारधारा पनपती है और क्रमशः वह समाज के संपर्क में आता है - यही क्रम उपर्युक्त अध्यायों में रखा गया है।

प्रथम अध्याय को सात खण्डों में बाँटा गया है क्योंकि वह सम्पूर्ण शोध-प्रबंध का आधार है, इसके अन्तर्गत जिन विषयों की चर्चा की गई है वही सम्पूर्ण प्रबंध में माला के धागे के रूप में अनूस्यूत रहे हैं। इस में विषय के महत्व को प्रकट करने के साथ-साथ परिवार में उपस्थित होने वाली विभिन्न स्थितियों, परिवार का अर्थ और परिभाषा, परिवार के कार्य, परम्परागत भारतीय परिवार की विशेषताएँ, परिवार के प्रकार, परिवार के विघटनकारी घटक, संयोजन का मुख्य आधार आर्थिक-नैतिक, पाश्चात्य अवधारणा, भारतीय अवधारणा आदि को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

द्वितीय अध्याय को दो खण्डों में विभाजित किया गया है - 'साठोत्तरी हिन्दी कहानी के प्रमुख हस्ताक्षर' और 'साठोत्तरी गुजराती कहानी के प्रमुख हस्ताक्षर'। कहानीकारों का जीवन परिचय, उनकी कृतियाँ एवम् जिन गुजराती कहानीकारों के फोटोग्राफ उपलब्ध हुए, उन्हें भी शोध प्रबंध में समाविष्ट किया गया है ताकि हिन्दी

विद्वान् सुप्रसिद्ध गुजराती साहित्यकारों से परिचित हो सकें। गुजराती में 'रघुवीर चौधरी, गुलाबदास ब्रोकर, मधुराय, जयंति दलाल, चुन्नीलाल मडिया, इश्वर पेटलीकर, कुन्दनिका कापड़िया, शिवकुमार जोशी' आदि कहानीकारों ने अपनी कहानियों द्वारा पारिवारिक विघटन की स्थितियों को प्रस्तुत किया है। साथ-साथ इन्हीं स्थितियों से जुडी कहानियाँ कई सामयिक पत्रिकाओं में वर्षा अडालजा, कनु अडासी, गिरीश गणात्रा और पराजित पटेल की कहानियों का भी समावेश किया है। हिन्दी के कहानीकारों में कमलेश्वर, उषा प्रियंवदा, मोहन राकेश, रांगेय राघव, ज्ञान रंजन, मन्नू भंडारी, दूधनाथ सिंह, राजेन्द्र यादव, चन्द्रकिरण सौनरेक्सा, दीप्ति खंडेलवाल, राजी शेठ, ममता कालिया आदि की कहानियों की चर्चा की गई है।

तृतीय अध्याय में 'परिवार के कार्यो में परिवर्तनजन्य विघटन स्थितियाँ और परम्परागत स्वरूप में परिवर्तन के फलस्वरूप पारिवारिक विघटन की स्थितियों' के अन्तर्गत हिन्दी-गुजराती कहानियों में आधुनिकींकरण के बाद जो परिवर्तन हुआ है, शिक्षा के बढ़ते प्रभाव के कारण भी आजकल परिवार विघटित हो रहे हैं, आर्थिक कार्यो में भी बहुत बड़ा परिवर्तन आया है, सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यो में परिवर्तन के साथ नारी स्थिति में बदलाव और मनोरंजन सम्बन्धी कार्यो में भी परिवर्तन आया - इन सभी स्थितियों का इस अध्याय के अन्तर्गत विवेचन किया गया है। 'स्वदेश दीपक' की 'महामारी', 'मोहन राकेश' की 'एक और जिन्दगी', 'सुहागिनें', 'मन्नू भंडारी' की 'नशा' और 'शायद', 'राजेन्द्र यादव' की 'टूटना', 'कमलेश्वर' की कहानी 'खोयी हुई दिशायें', 'कुन्दनिका कापड़िया' की 'छलना', 'मधुराय' की 'डमरू' आदि हिन्दी और गुजराती कहानियों के माध्यम से परिवर्तनजन्य विघटन स्थितियों को इस अध्याय में दर्शाने का प्रयास किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में व्यक्ति के मानसिक तनाव से जो विघटनकारी स्थितियाँ बनती हैं, उन्हीं को प्रस्तुत किया गया है। आधुनिक युग में व्यक्ति में व्यक्तिगत चेतना का एहसास इतना अधिक है, जिसके परिणामस्वरूप घृणा, ईर्ष्या और विद्वेष, सहानुभूतिहीनता, सीमित आय, बढ़ता हुआ व्यक्तिवाद, वैयक्तिक स्वतन्त्रता की प्रवृत्ति के कारण पति-पत्नी के सम्बन्धों में काफी बदलाव आया, परिवार में रहनेवाले लोगों में भिन्न प्रकृति के कारण कलह होने लगी, पति से बढ़कर पत्नी की प्रगति, पति द्वारा पत्नी के मानसिक तनाव की स्थिति को साठोत्तरी हिन्दी-गुजराती कहानियों में दर्शाया गया है। इन कहानीकारों में 'उषा प्रियंवदा', 'मोहन राकेश', 'राजेन्द्र यादव', 'कमलेश्वर', 'कृष्णा सोबती', 'गिरिराज किशोर', 'सुधा अरोड़ा', 'धर्मवीर भारती', 'उर्मिला मिश्र', 'रघुवीर चौधरी', 'धीरूबेन पटेल', 'रामदरश मिश्र' आदि सम्मिलित हैं।

पंचम् अध्याय 'सामाजिक मान्यताओं के उल्लंघन से उद्भूत पारिवारिक विघटन की स्थितियाँ - हिन्दी-गुजराती कहानी के संदर्भ ' में दिखलाया गया है कि सामाजिक मान्यताओं के उल्लंघन से पारिवारिक विघटन की स्थितियों को जैनेन्द्र, यशपाल, अज्ञेय आदि कहानीकारों ने भी चित्रित किया था। जैसा व्यक्ति होगा, वैसा ही समाज होगा। किन्तु, स्वतंत्रता के पश्चात् अथवा इसके आस-पास जन्म लेनेवाले कहानीकारों - राजेन्द्र यादव, मोहन राकेश, कमलेश्वर, निर्मल वर्मा, मन्नू भण्डारी, भीष्म साहनी, शैलेष मटियानी, रेणु, मार्कण्डेय, उषा प्रियंवदा, कृष्णा सोबती, धर्मवीर भारती एवं अमरकान्त आदि ने अपने समय के समाज में उपर्युक्त स्थितियों को बड़ी तीव्रता से अनुभव किया और व्यक्ति की भावनाओं, दुःख-सुख, घुटन-वेदना, टीस-छटपटाहट, अकेलेपन, अजनबीपन, परिवारों की टूटन, प्रेम-सम्बन्धों में परस्पर संघर्ष, प्राचीन

एवम् नवीन मूल्यों के संघर्ष का जैसा अनुभव किया - उसका बड़ा ही संवेदनशील एवम् यथार्थपूर्ण चित्रण अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है। मनुष्य को समाज में रहकर अपनी बहुत-सी इच्छाओं का दमन करना होता है। व्यक्ति समाज में रहकर सामाजिक मान्यताओं की अवहेलना नहीं कर सकता। इन्हीं समस्याओं को प्रस्तुत करने का प्रयास इस अध्याय में किया गया है।

षष्ठ अध्याय 'आर्थिक तनाव से उद्भूत पारिवारिक विघटन की स्थितियाँ - हिन्दी-गुजराती कहानियों के सदंर्भ' में यह बतलाने का प्रयास किया गया है कि आर्थिक तनाव ही जीवन की सबसे बड़ी विडम्बना है। जिसका प्रमुख कारण बढती महँगाई है। इस महँगाई के कारण व्यक्ति आर्थिक विवशताओं के बीच पिसता जा रहा है। यह संघर्ष एवं लड़ाई केवल ग्रामीण निर्धन व्यक्ति की नहीं है, अपितु मध्यम वर्ग, उच्च मध्य वर्ग और शहरी वर्ग भी इस लड़ाई में सम्मिलित है। आर्थिक तनाव के कारण ही परिवार में अशान्ति और अलगाव का वातावरण पनपता है। आर्थिक समस्याओं के कारण कई तनावजन्य विघटनकारी स्थितियाँ उद्भूत होती हैं। साठोत्तरी हिन्दी-गुजराती कहानीकारों ने बिना लागलपेट के जीवन के हर पल को उद्घाटित किया है - उनकी विवेचना इस अध्याय में की गई है।

सप्तम् अध्याय - 'व्यावसायिक तनाव से उद्भूत पारिवारिक विघटनकारी स्थितियाँ' की प्रमुख विवेच्य वस्तु 'बेरोज़गारी' से उत्पन्न होने वाले विखण्डन से संबंधित है। शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् युवाओं को नौकरी नहीं मिल रही है, जिससे उनमें कुंठा, आक्रोश तथा गहरी निराशा व्याप्त हो गई है। इस लिये परिवार में तनाव बढ़ने लगा तो स्त्रियाँ भी अपने परिवार को सहायता करने के उद्देश्य से विभिन्न व्यवसायों

से जुड़ने लगीं। विभिन्न व्यवसायों और उनसे जुड़ी स्थितियों के कारण मानवीय सम्बन्धों में तनाव बढ़ गया। आधुनिक युग में व्यवसायों का स्वरूप और प्रक्रिया अत्यधिक जटिल हो गई है। 'मंजुल भगत' की 'पाव-रोटी और कटलेट्स', 'दीप्ति खंडेलवाल' की 'बेहया' और 'प्रयास', 'निरूपमा सेवती' की कहानी 'टुच्चा', 'से. रा. यात्री' की 'अँधेरे का सैलाब' और 'व्यवस्था', 'आशीष सिन्हा' की 'आदमखोर', 'सुधा अरोड़ा' की 'दमनचक्र', 'मेहरुन्निसा परवेज' की 'अकेला गुलमोहर' आदि कहानियां व्यवसायजन्य जटिलताओं को व्यक्त करती हैं। इन कहानियों में आर्थिक नीतिमत्ता का तो स्पष्ट अवमूल्यन दिखाई देता ही है, सम्बन्धों में बिखराव और अन्य अमानवीय कार्यकलापों का कारण भी 'अर्थ' ही बना है, ऐसा चित्रण किया गया है। इस अध्याय में ऐसी सभी स्थितियों पर विचार किया गया है।

अष्टम् अध्याय 'बदलते पारिवारिक सम्बन्धों के कारण हुए विघटन का साठोत्तरी कहानी के शिल्प पर प्रभाव' के अन्तर्गत यह दिखलाने का प्रयास किया गया है कि स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात् कहानीकार के दृष्टिकोण एवम् चिन्तन-दिशा में बड़ा परिवर्तन आया, जिससे क़हानी का स्वरूप भी परिवर्तित हुआ है। फलस्वरूप, कहानी ने पुराने परिधान को त्यागकर नवीन वेश धारण कर लिया है। उसमें शिल्पगत परिवर्तन के साथ अभिव्यक्ति की दिशा भी बदली है। जहाँ घटनाएँ काल्पनिक, संयोग से प्रसूत तथा अमानवीय तत्वों पर आधारित होती थीं, वहाँ अब वे अनुभूत हैं। उनमें जीवन-बोध की नई दिशा है। कहानी घटनाओं और स्थितियों के विवरण-निरूपण और संयोजन द्वारा मानवीय संयोजन द्वारा मानवीय सम्बन्धों, अनेक अन्तर्विरोधों और विसंगतियों आदि के संकेत करती है। कहानियों के शिल्प और शैली में परिवर्तन का कारण पुरातन विश्वासों और मूल्यों के आकर्षण का समाप्त होना है। अतः आज का

कहानीकार परम्परावादी शिल्प को त्यागकर रचना की संगुफित बुनावट द्वारा पारिवारिक सम्बन्धों के बदलाव को अभिव्यक्त करता है। इन प्रभावों के फलस्वरूप हिन्दी कहानी में शिल्प की दृष्टि से व्यापक परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। आज की हिन्दी कहानी में शिल्प की दृष्टि से जो सुधार हुआ है, उसे बदलते पारिवारिक सम्बन्धो के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है।

मैं सर्व प्रथम उन साहित्यकारों के प्रति अपना नमन एवं धन्यवाद प्रकट करती हूँ जिनका विपुल साहित्य भण्डार प्रस्तुत शोध-प्रबंध का आधार बना है। उनके साहित्य में उपलब्ध विषय विवेचन, विश्लेषण, उद्देश्य व प्रेरणा इस शोध-प्रबंध के लिये पर्याप्त सामग्री उपलब्ध कराने में सहायक हुए।

मैं हृदय से समर्पित व आभारी हूँ **डॉ. (श्रीमती) इन्दु शुक्ल** (रीडर, हिन्दी विभाग, म.स. विश्व विद्यालय, बड़ौदा) के प्रति, जो मेरे शोध-प्रबंध की निर्देशिका हैं और जिनके सहयोग, प्रेरणा तथा आशीर्वाद के अभाव में प्रस्तुत शोध प्रबंध अपनी पूर्णता प्राप्त करने में असफल रहता। पल-पल मिला उनका निर्देश सदैव मेरा सम्बल बना। मेरी व्यक्तिगत समस्याओं को सुलझाकर मुझे आगे बढने की राह दिखाकर वह सदैव मेरे साथ रहीं। वैवाहिक जीवन जहाँ जीवन की कुछ रिक्तताओं को भरता है, वहीं उसके साथ कुछ दायित्व और विवशताएँ भी जुडी रहती हैं, जो अध्ययन और शोध-कार्य के आड़े आकर खडी हो जाती थीं, उस समय श्रीमती शुक्ल का अनुभव सदैव मेरा मार्गदर्शन करता रहा है। बेटी की परवरिश के साथ निराश होते मन को उत्साह दिया **प्रोफेसर दयाशंकर शुक्लजी** ने, जिनका मैं हर पल आदर करती हूँ। मेरी बडी से बडी मुश्किल को सहज रूप में आसान कर देने वाली उनकी क्षमता ने

मुझे मेरा ध्येय प्राप्त करने में अनेक बार सहायता प्रदान की है। उनका प्रोत्साहन मेरे लिए अविस्मरणीय है।

मेरे प्रेरणाधर **पिताजी – श्री सी. जे. परमार** तथा **माताजी – श्रीमती जयश्री परमार** के प्रति मैं मात्र आभार व्यक्त कर उऋण नहीं हो सकती। मैं तो साधन मात्र हूँ, साध्य तो वे स्वयं है। जीवन में यहाँ तक पहुँचने में उनकी प्रेरणा ही मेरा आधार रही है। उन्होंने सामग्री उपलब्ध कराने में भी मेरा सहयोग दिया, उनका मैं नतमस्तक होकर आभार व्यक्त करती हूँ।

विवाहोपरान्त मेरे सास-ससुर **श्री आर. सी. परमार** एवम् **श्रीमती जयाबेन आर. परमार** मेरे माता-पिता तुल्य ही रहे हैं, उनका आशीर्वाद सदैव मेरे साथ रहा। मेरे **पति– श्री जयेश परमार** की वैज्ञानिक कार्य पद्धति और जीवन सहचर के रूप में उनकी सहयोगी मुद्रा मेरा बडा अवलम्ब बनी रही। बीच-बीच में बाधाएँ आती रहीं, किन्तु केवल वही थे, जिन्होंने मुझे बार-बार उबार लिया।

मेरी **बेटी – आकांक्षा**, मेरी पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त करने की आकांक्षा को पूर्णत्व देने में प्रायः बाधा नहीं बनी। उसकी बाल-सुलभ गतिविधियाँ मेरी निराशा और थकान में मेरे मन को थपकाती रहीं और मुझे हर्षित करती रहीं। इन सब के सहयोग को मैं कभी भुला नहीं सकती।

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग की अध्यक्षा **डॉ. अनुराधा**

दलाल मेरी गुरू रही हैं और सदैव मुझे अपने मार्गदर्शन से लाभान्वित करती रहीं। मैं हृदय से उनके समक्ष नमित हूँ और अपना आभार व्यक्त करती हूँ। विभाग के अन्य अध्यापकगण भी समय-समय पर अपने सुझाव देते रहे जिसका समावेश मैंने अपने शोध-प्रबंध में किया है। मैं उनके प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। श्रीमती हंसा मेहता लाइब्रेरी तो विगत कुछ वर्षों से मानो मेरा दूसरा घर ही रही है। घर से फुरसत मिलते ही मैं वहाँ पहुँच जाती थी और अपने बार-बार छूटे कार्य को शीघ्र पूर्ण करने का प्रयास करती थी। लाइब्रेरी के विभिन्न स्तर के कार्यकर्ताओं के सहयोग के बिना मेरा यह शोध-प्रबंध पूर्ण नहीं हो सकता था। मैं हृदय से उनके प्रति अपना आभार व्यक्त करती हूँ। आदरणीय श्री सतीश सुतरियाजी ने जिस तरह मेरी सम्पूर्ण शोध-यात्रा में अपना मार्गदर्शन और सहयोग दिया है, उसे भुला पाना असंभव है, मैं उन्हें धन्यवाद देकर उनके स्नेह से उऋण नहीं हो सकती। इस शोध प्रबंध के टंकक श्री प्रवीण मोरे की भी मैं बहुत-बहुत आभारी हूँ, उन्होंने बहुत कम समय में मेरा सारा कार्य निपटाकर मेरी कठिनाईयाँ दूर की हैं।

अन्त में उन सभी को धन्यवाद देती हूँ, जिनसे मुझे जाने-अनजाने इस शोध कार्य में सहयोग मिला है।

।। अस्तु ।।

– किन्नरी परमार